Gyanvividha, Vol.-2; Issue-2 (Apr.-June) 2025 : PP-48-50

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-2 (Apr.-June) 2025
Page No.- 48-50
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

डॉ. अजीता प्रियदर्शिनी
सहायक प्राध्यापिका,
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
रमेश झा महिला महाविद्यालय, सहरसा.

Corresponding Author :

डॉ. अजीता प्रियदर्शिनी
सहायक प्राध्यापिका,
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
रमेश झा महिला महाविद्यालय, सहरसा.

आंचलिक संवेदना के कथाकार-''फणीश्वर नाथ रेणु''

फणीश्वर नाथ 'रेणु' का देश के आंचलिक कथाकारों में सर्वश्रेष्ठ स्थान है। रेणु सामज-सापेक्ष व्यक्ति थे। वे समाज के रंग में बिल्कुल रंगे हुए थे। उनकी यही समाज-सापेक्षता, समाज में उनकी रमने की प्रवृति और वही से उन्हीं की भाषा में सामग्री लेकर रख देने की चेष्टा उनके साहित्य को यथार्थ से अभिन्न बनाती है। उन्होंने प्रायः सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलायी है। उसका आधार उनकी यही समाज सापेक्ष है। समाज लेखक को रस और रूप दोनों प्रदान करता है। रोना, हँसना, गाना, प्यार आदि जितनी भी मनुष्य की स्वाभाविक क्रिया है, उन क्रियाओं द्वारा लेखक को भाव व रस दोनों प्राप्त होता है, जिसे वह अपनी रचनाओं में व्यक्त करता चलता है।

'रेणु' की प्रतिभा बहुआयामी थे। उन्होंने श्रेष्ठ साहित्य लिखने के साथ-साथ अनेक साहित्य रूपों पर भी अपनी लेखनी चलायी। उन्होंने शिल्प के स्तर पर नए-नए प्रयोग भी किये। उन्होंने आंचलिक उपन्यास, कहानी, रिपोर्ताज, एंकांकी, रपट, साक्षात्कार, स्केच, संस्मरण, निबंध व्यंग्य और कविता आदि प्रायः सभी लघु-गुरु विधाओं द्वारा साहित्य भंडार को समृद्ध किया। वे इतने अधिक साहित्य रूपों का प्रयोग करनेवाले हिन्दी के सम्भवतः अकेले साहित्यकार हैं।

'रेणु' ने कुल छः उपन्यास लिखे। ''मैला आँचल'' (1954 ई.), 'परती परिकथा' (1957 ई.) 'दीर्घतपा, अथवा कलंक मुक्ति' (1963 ई.), 'जुलूस' (1965 ई.), 'कितने चौराहे' (1966 ई.) तथा 'पल्टू बाबू रोड' (1979 ई.)।

'रेणु' अपनी पहली औपन्यायिक कृति ''मैला आँचल'' के प्रकाशित होते ही हिन्दी साहित्याकाश में छा गए थे। ''मैला आँचल'' उपन्यास के द्वारा फणीश्वरनाथ 'रेणु ने पूरे भारत में ग्रामीण-जीवन का

चित्रण करने की कोशिश की है। इस अंचल विशेष में वहाँ की संस्कृति पेड़-पौधें, भाषा, रहन-सहन, आचार-विचार, पर्व-त्योहार, परम्पराएँ, रीति-रिवाज कहानी के विषय वस्तु होते है। इनका आंचालिक परिवेश स्थानीय न होकर सार्वदेशीय है। इसमें ग्रामांचलों की समस्त धड़कने कैद है। इस आंचलिक उपन्यास में मेरीगंज के अंचल को चित्रित करने के साथ-साथ पूर्णिया जिले के वस्तुगत चित्र उपस्थित किए गए हैं। इस उपन्यास में अंचल विशेष के वास्तविक जीवन को रुपाचित किया गया है। वैसे तो फणीश्वरनाथ 'रेणु' की मान्यता है कि – "साहित्य का मूल स्त्रोत- जीवन और सहजता है, उसी में सौन्दर्य है। आंचलिक उपन्यास का प्रतिपाद्य ग्राम, वन, नगर, शहर कोई भी अंचल हो सकता है जो लोग आंचलिकता को सीमाओं में बाँध कर उसे अलग कर देना चाहते हैं, वे भूल करते हैं । संस्कृति, रीति-रिवाज, लोकवाणी, इतिहास तथा प्राकृतिक दृश्यावली से मिलकर ही क्षेत्र विशेष 'अंचल' बनता है।"[01]

आंचलिक उपन्यास का नायक व्यक्ति विशेष न होकर अंचल होता है साथ ही आँचलिक उपन्यास में कथाओं का भंडार होता है। "मैला आँचल" से पहले कुछ और अन्य उपन्यास प्रकाशित हुए थे जो बहुत हद तक आँचलिक उपन्यास जैसे ही थे लेकिन आँचलिक उपन्यासों से साम्य रखने के बावजूद उनमें बिल्कुल आँचलिक जैसी चीज नहीं थी। उन उपन्यासों में आंचलिकता का भ्रम पैदा करनेवाली विशेषता थी स्थानीयता। उसी स्थानीयता को बहुत से लोग आंचलिकता मानने लगे। इसी संबंध में डॉ. रामदरश मिश्र लिखते हैः-"यह भी भ्रम है। स्थानीय रंगत तो प्रायः सभी उपन्यासों में होती है। कथा जिस प्रदेश में बहती है वहाँ की प्रकृति, वेशभूषा, रीति-रिवाज की रंगत लेखक उपन्यास में देता चलता है। आंचलिक उपन्यास तो अंचल के समग्र जीवन का उपन्यास है। इसका संबंध जनपद से होता है, ऐसा नहीं, वह जनपद की ही कथा है।"[02]

रेणु का "मैला आँचल" हिन्दी उपन्यास-लेखन के क्षेत्र में एक अभिनव क्रांति का सूत्रपात करता है। इनके उपन्यास परम्परागत उपन्यास शिल्प के साँचें में पूरी तरह ढले नहीं है। यह उनकी अपनी विशेषता है। इस विशेषता के कारण कोई उनके उपन्यासों को शिथिल बंध के उपन्यास कहता है और कोई नायक विहीन उपन्यास। वास्तविकता यह है कि उनके उपन्यासों में अँचल-विशेष को ही नायकत्व हासिल हुआ है। अब यह अंचल क्या है इसे लेकर विद्वानों में पर्याप्त मतभेद पाया जाता है। कुछ लोग इसका मतलब सुदूर-पिछड़े ग्रामांचल से ही लेते हैं, जबकि कुछ अन्य लोग इससे भिन्न राय रखते हैं । उनमें से एक प्रमुख रचनाकार के अनुसार "वास्तविक यह है कि अंचल एक देहात हो सकता है, एक भारी शहर भी, शहर का एक मोहल्ला भी और इन सबसे दूर सघन वनों की उपत्यका भी।"[03]

"मैला आँचल के पिछड़ेपन के कारणों को स्वातंत्र्योत्तर विकास योजनाओं के सहारे दूर करने की कोशिश "परती" परिकथा उपन्यास में दिखलाई देता है। परतीः परिकथा एक स्वप्नगाथा है था यो कहें कि एक सपने के यथार्थ में परिवर्तित होने की कहानी है। इसमें स्वातंत्रयोंतर देश काल का चित्रण हुआ है। 1957 ई. में यह उपन्यास प्रकाशित हुआ था, इसलिए इसमें "मैला आँचल" के बाद की कथा है। "जुलूस" में पूर्वी पाकिस्तान से जो षरणार्थी आये थे, उन्हें पूर्णिया जिले में बसाये जाने के कारण उत्पन्न सांस्कृतिक टकराव और समन्वय की कहानी है।

आजादी के बाद जितनी भी महिलाएँ नौकरी के पेशा में आयी थी, उनके साथ अनेक तरह की समस्या थी। उसी समस्या को दूर करने की प्रक्रिया में सामने आये 'वर्किंग वीमेन्स हॉस्टलों' के जीवन को 'दीर्घतपा' अथवा 'कलंक मुक्ति' उपन्यास में चित्रित करने का प्रयास किया गया है। उनके शोषण की स्थितियों पर प्रकाश डाला गया है।

'पल्टू बाबू रोड' उपन्यासों में आजाद भारत में पद और प्रतिष्ठा पाने के लिए लोग किस प्रकार स्त्रियों का उपयोग करते है, इसी तथ्य को उद्घाटित किया

गया है। स्वतंत्रता आंदोलन में किशोर छात्रों ने जो भूमिका अदा की थी। 'कितने चौराहे' उपन्यास में उनकी इसी भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार रेणु के उपन्यासों में स्वतंत्रता के पहले और बाद के भारतीय जीवन-यथार्थ का प्रभावशाली चित्रण हुआ है। उनके उपन्यास 'परती परिकथा' के बारे में प्रख्यात आलोचक डॉ. सुवास कुमार ने लिखा है-"परती परिकथा फणीश्वरनाथ रेणु का एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। इसमें भारत के स्वातंत्र्योत्तर परिवेश में सबसे विश्वसनीय समाजशास्त्र है जो जितना ही यथार्थ है, उतना ही कलात्मक भी। सामुदायिक जीवन का ऐसा बेजोड़ चित्रण भारतीय उपन्यास साहित्य में गिना-चुना ही होगा।"[04]

रेणु की कहानियों की जो विषय-वस्तु है, उसे देखकर साफ पता चलता है कि उनकी कहानियाँ जीवन को व्यापक और गहराई में जाकर चित्रित करना चाहती है। अब रेणु की कहानियों के संबंध में भारत यायावर लिखते हैं-"जो वस्तुगत विविधता, भाषिक संरचना के तत्व, ध्वनियों के प्रति, लय के प्रति रुझान, प्रयोगधर्मिता-रेणु के पिछले संग्रहों की कहानियों में पाठकों ने देखे हैं, उनसे अलग ये कहानियाँ नहीं है। पर ये उन तमाम चीजों को और भी विस्तार देते है।"[05]

रेणु ने अपनी कहानियों में सभी जगह ऐसी मार्मिकता पैदा की है, जिसके संस्पर्शों से पाठक का मन भींग-भींग सा जाता है। यह सही है कि शुरू से लेकर अन्त तक रेणु की कहानियों में प्रेम की संवेदना के समानान्तर सामाजिक चेतना की धारा प्रवाहित होती रहती है, फिर भी उनकी कहानियों में ये दोनों स्वर परिस्थिति के अनुसार तेज और धीमे होते दिखलाई पड़ते हैं। डॉ. सुरेन्द्र चौधरी उनकी कहानियों के संबंध में लिखते हैं-"ठुमरी की तमाम कहानियाँ किसी क्लासिकल या कालजयी रचना की बजाय लोक जीवन की स्वच्छन्दता और लय प्रकट करती है। बदलते हुए जीवन के संदर्भ में इन दो अत्यन्त भिन्न कारक तत्वों की अवहेलना करके हम कहानियों की आलोचना में कुछ नहीं जोड़ पाये हैं। पर धीरे-धीरे अग्निखोर तक आकर यह स्वच्छन्दता और लय बदलकर तनाव में प्रकट होती है। बदलती हुई जिन्दगी का इससे अच्छा दूसरा उदाहरण हमें अन्यत्र कम मिल पाएगा। प्रेमचन्द के बाद रेणु अकेले लेखक हैं, जिनमें कथा-रस भी है और बदलते हुए यथार्थ से उत्पन्न तनाव की नाटकीयता भी है।"[06]

1945 ई. से उन्होंने कथा-रचना आरम्भ की। उनकी यह कथा यात्रा कभी मंथर तो कभी तेज गति से जीवनपर्यन्त चलती रही। जब वे जीवित थे तब उनके तीन कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए। ये संग्रह हैं-'ठुमरी' (1959 ई.) 'आदिम रात्रि की महक' (1967 ई.) और 'अग्निखोर' (1973 ई.)। इन संग्रहों में उनकी कुल 34 कहानियाँ संग्रहीत थी। उनके निधन के बाद युवा साहित्यकार श्री भारत यायावर ने उनकी अप्रकाशित कहानियों के दो संग्रह प्रकाशित कराये। वे संग्रह हैं-"एक श्रावणी दोपहरी की धूप' (1984 ई.) और 'अच्छे आदमी' (1986 ई.)। रेणु की कहानियों की विषय-वस्तु में जितना नयापन है उनका शिल्प भी उतना ही नया और ताजगी से परिपूर्ण है। उनकी कहानियों में गाँव और शहर दोनों अपनी विशिष्टता के साथ अंकित हुए हैं। उनकी कहानियों में प्रेम और सामजिक चेतना के तत्व शुरु से अंत तक दिखाई पड़ते हैं।

संदर्भ सूची :

1. भगवती प्रसाद शुक्ल, आँचलिकता से आधुनिकता का बोध, पृष्ठ-129.
2. डॉ. रामदरश मिश्र, हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा, पृष्ठ-235.
3. राजेन्द्र अवस्थी, सारिका, रेणु स्मृति अंक, सम्पादकीय.
4. डॉ. सुवास कुमार, विपक्ष, रेणु विशेषांक, पृष्ठ-212.
5. रेणु रचनावली, भाग-1 भूमिका.
6. सुरेन्द्र चौधरी, फणीश्वरनाथ रेणु, पृष्ठ-39.

•